संभव है सोचते हो,
काश तुम मिटा सकते
मेरी इस आस्था को—
कि अच्छे दिन आयेंगे
कल यही जीवन सुखद होगा,
प्राणमय, संगीतमय।

आस्था को कुचलोगे?
गोलियों से छेदोगे?
व्यर्थ है प्रयास यह।
वज्र सी कठोर छाती
कवच है आस्था की।
गोलियां जो छेद सकें मेरी दृढ़ आस्था को
अभी वे ढली नहीं,
अभी वे बनी नहीं।